## स्रम विभाग

## आदेश

## दिनांक 24 जून, 1986

सं भो निवं /एफ न्ही । 133-85/21325. -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं (1) कार्याकारी समियन्ता, सापरेशन डिविजन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, पलवल, (2) मुख्य श्रीभयन्ता, सोपरेशन डिविजन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, पलवल, (2) मुख्य श्रीभयन्ता, सोपरेशन डिविजन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, वण्डीगढ़ के भीमक भी भ्रमर सिंह पुत्र श्री उजागर सिंह मार्फत श्री श्रानन्द पाल श्रतरी एडवोकेट सिविल कीर्ट कलवल, जिल्ला करीदावाव, तथा उसके प्रशन्कों के मध्य इसमें इसके बाद खिखित मामले में कोई श्रीक्षोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपान विवाद को न्यायिवर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, ओद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई इन्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसकें द्वारा सरकारी अधिसूचना स० 5415—3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जूब, 1978, के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना स० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की छारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिवर्षय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रशन्मकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या दिवाद से सुसंगत प्रथना संबंधित मामला है :---

नमा श्री श्रमर सिंह, पुत्र श्री उजागर सिंह की सैवाओं का' समापन न्यामीनित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह कित राष्ट्रत का हकदार है ?

सं धो वि । एफ . डी /142-85/21333. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. प्रशासक मार्कीट कमेटी, बल्लबनद के धामिक श्री सतपाल सिंह मार्फत श्री ग्रारं सी० धर्मा, एडवोकेट, I-सी/II-ए, एन० ग्राई० टी०, फरीदाधाद तथा असके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसचिए, शव, श्रीदोगिक विवाद प्रितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की नई बिताबों का प्रयोग करते हुगे, हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी श्रिवसूचना सं 5415—3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पहते हुए श्रीवसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उन्त श्रीवित्तम्य की द्वारा 7 के श्रवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त मा उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनग्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उस्त प्रवन्धकों सथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त वाबला है या विवाद से सुसंगद प्रयवा संबंधित धामला है :---

क्या भी सताल सिंह पुत्र श्री मुलसर राम की सेवामों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि बहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?

सं. भो.वि./एफ.डी./142-85/21339.—चूंकि हरिवाणा के राज्यपान की राम है कि मैं अशासक मार्कीट कमेटी, बल्लवगढ़ के बाबिक की जगदीश लाल मार्फत भार० सी० शर्मा, एडवोकेट I सी/II-ए एन० ग्राई० टी०, फरीदानाद≽ सवा उसके ब्रबन्डकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांडनीय समझते हैं;

इसलिए, भ्रम, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की वारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई बिनियमें का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनोक 10 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिमूचना सं 11495-जी-अम-57/11245, दिनोक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त मिलियम की भारा 7 के अधीन गठित अम न्याबालय, फरीदाबाद, को विवादशस्त या सससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला स्थाविर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :—

क्याश्री जगदीश जाल, पुत्र श्री मोती राम, की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह कि त राह स का हकदार है ?